Vol II Issue X

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue.10,Nov. 2012
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net
ORIGINAL ARTICLE

राजेन्द्र यादव के उपन्यासों में अभिव्यक्त जीवन मूल्य

Suman Yadav

Department Of Hindi
Singhania University,Rajasthan

सारांश :

मूल्यों के संदर्भ में अक्सर 'संक्रमण' शब्द प्रयुक्त होता नजर आता है और साथ ही नवीन जीवन–मूल्यों की चर्चा भी देखने–सुनने को मिलती है। तब यह स्वाभाविक रूप से विचार उभरता है कि क्या मूल्य का विघटन पुरातन (पूर्व–प्रतिष्ठित) मूल्यों को निष्कासित करने एवं नवीन मूल्यों की स्थापना से सम्बन्धित है। जीवन–मूल्य की स्थिर अवधारणा नहीं होने के कारण यह जीवन की भांति ही गतिशील–परिवर्तनशील है। जीवन–मूल्यों में भी परिवर्तन आदि होता रहता है। परिवर्तन के इस चक्र के रूप में मूल्य–संक्रमण की स्थिति और नवीन मूल्यों की उद्भावना की स्थिति बनती है।

प्रस्तावना :

परिवर्तन सृष्टि का नियम है। दिन रात, सूर्योदय–सूर्योदय, ऋतु–चक्र आदि की क्रमानुसार पुनरावृति प्रकृति के रूप अटल नियम का परिवर्तन चक्र है। हालांकि परिवर्तन कोई सनातन घटक नहीं है, किन्तु शाश्वत अवश्य है। अपनी प्रकृति में अनित्य होने के बावजूद परिवर्तन सृष्टि की नित्य प्रक्रिया है। कल्पना किजिए यदि प्रकृति के इस परिवर्तन–चक्र में ठहराव आ जाये तो चराचर जीवन–जगत की क्या स्थिति होगी? परिवर्तन की यह प्रक्रिया समाज में भी गतिशील रहती है। समाज के संदर्भ में यह परिवर्तन की गतिशीलता का मूलाधार है। प्रक्रिया और 'परिवर्तन' सदैव उपस्थित रहेने वाले दो सार्वभौमिक तथ्य हैं। डासन और गेटिस के शब्दों में कहा जा सकता है कि क्रिया और परिवर्तन सदैव उपस्थित रहने वाले सार्वभौमिक तथ्य है। लम्ले ने भी परिवर्तन को अवश्यंभावी माना है और कहा है– कई कारणों से सामाजिक परिवर्तन अवश्यंभावी है। जिसे टाला नहीं जा सकता– रहा है। और है। अगर केवल विघटनकारी प्रविृत्ति बनी रहे और नवीनता का समावेश– हो तो इससे मानव–समाज को अपार हानि होती है केवल व्यक्ति की नष्ट नहीं होते बल्कि वंश और जातियाँ मृत हो जाती है, तब उनके जीवन को निर्देशित करने वाले मूल्य अथवा आदर्श बिना क्षतिपूर्ति अथवा नवीकरण के असफल या विलुप्त हो जाते है।'

वैसे यहाँ स्वाभाविक–सा प्रश्न यह उभरता है कि क्या मूल्यों की निर्माण प्रक्रिया और मूल्य–परिवर्तन एक ही अर्थ के घटक हैं अथवा अलग–अलग संकल्पनाएँ हैं?परिवर्तन बदलाव का सूचक है। 'मूल्य–परिवर्तन' शब्द पर विचार करते समय यह स्पष्ट किया जा चुका है कि जब किसी वस्तु में अतित की अवस्था बदल जाए और वर्तमान अवस्था में काई अंतर जा जाए तो वह परिवर्तन है। यह पूर्व–स्थिति के नष्ट होने और उसके स्थान पर दूसरी स्थिति उपस्थित नहीं होने से सम्बन्धित है। इस तरह परिवर्तन किसी भी प्रकार के अन्तर का द्योटक है।

'परिवर्तन का उत्साहपूर्ण स्वागत प्रायः जीवन का एक ढंग हो गया है।'' किन्तु जब हम मूल्यों के संदर्भ में परिवर्तन पर विचार करते है तो अंतर परिवर्तन की संकल्पना में पूरी तरह से समाहित नहीं हो पाता है। कुमार विमल के अनुसार यों प्रत्येक हेर–फेर मूल्यगत परिवर्तन नहीं है। केवल हेर–फेर और के लिए बदलाव एक फैशन है। सिर्फ वही हेर –फेर, जिसमें कोई केंद्रीय सार्थकता हो। ऐसी सार्थकता जो जीवन–सचेतना, मानसिक संरचना या विचार –सरणि को प्रभावित हो और सांस्कृतिक सातत्य के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण हो, वास्तविक 'परिवर्तन' है, इस प्रकार परिवर्तन संबंधी क्रिया सार्थकता पर अवलबित है। यह सार्थकता सामाजिक–सांस्कृति संदर्भ में ही उपयुक्त सिद्ध होती है। जीवनानुभूतियों और मानसिक विचार–सराणि से सम्बन्ध जो नए मूल्य खोजे जाते हैं, उनके पीछे खोज की जिज्ञासा और अभिलाशा न होकर फैशन की बू होती हैं।' इस तरह बदलाव के लिए बदलाव परिवर्तन मात्र नही हैं।

मानव–जीवन में ज्यों–ज्यों स्थितियों में बदलाव मनुष्य के सोचने विचारने, रहने सहने, खान–पान आदि विविध स्तरों पर देखा जा सकता है। रेल्फ फाक्स के अनुसार भौतिक शक्तियाँ मानव–चेतना को बदलती है और मानव–चेतना भौतिक शक्तियों को बदलती है। इस प्रकार भौतिक परिस्थितियों को बदला हुआ मानव स्वयं को भी बदलता है' जब मनुष्य स्वयं बदलता है तो समाज में परिवर्तन आता है, उसके जीवन–मूल्यों में भी बदलाव दृश्टिगोचर होने लग जाता है। वस्तुतः यह यथार्थ परिवर्तमान जगत है, जो धीरे–धीरे अपने परिवर्तनों में जटिलतर होता गया है। माननीय सम्यता के आदिम युग से आज तक के परिवर्तनों के विभिन्न स्तरों का विवेचन किया गया हे। इन भौतिक आवश्यकताओं के मूल–स्वरूप मानविय आचार–विचार तथा आदर्श तथा आध्यात्मिक आदर्शों का उदय विल्य और नवीनीकरण होता रहता है। भौतिक परिस्थितियों के बदलजाने से इन आदर्शों में भी परिवर्तन हो जाता है। वस्तुतः युग, काल, देश–प्रदेश और सामाजिक राजनीतिक अपेक्षाओं के अनुसार जीवन मूल्यों में परिवर्तन एक अनिवार्य और नैसर्गिक प्रक्रिया है क्योकिं ये विभिन्न परिस्थितियाँ ही मूल्य–तंत्र को निर्मित करती है। मूल्य–परिवर्तन वास्तव में वह परिवर्तन है जो जीवन सरणि को प्रभावित करने में सार्थक हो और सांस्कृतिक सांगत्य के संदर्भ में भी महत्त्वपूर्ण हो। इस कारण भौतिक परिवर्तनों की अपेक्षा मूल्य–परिवर्तन की गति धीमी होती है– ये संक्रमित अधिक होते हैं।

मूल्यों का उत्थान–पतन मानव बौद्धिकता की वैचारिक अभिव्यंजना पर आधारित होता है। मानव की प्रवृत्तियों के साथ इनका

DSpace™

निर्माण, चयन, ग्रहण, वर्जन, त्याग एवं स्थापना होती है। मानव जीवन के किसी भी मूल्य में तब तक बदलाव नहीं आता है जब तक कि वह मनुश्य के आंतरिक जगत एवं अनुभव के प्रतिकुल न हो जाए। मानवीय जीवन और – मूल्यों की चेतन भावना के संदर्भ में वस्तुतः मूल्य जीवन–धारा के प्रवाह के टूटने और बहने वाले किनारे हैं जिन्हें धारा स्वयं बनाती हुई चलती है और स्वप्रवाह की स्वेच्छा से उसका विघटन कर नवनिर्माण भी करती है।' मूल्य–संक्रमण की यह प्रक्रिया अनवरत् रूप से चलती रहती है। मानवीय मूल्य विराट मानव जीवन की अगणित शिराओं में संचारित होता रहता है। जहाँ भी यह रक्त प्रवाह रूका वही अंग पक्षाघात से आहत होकर सूख जाता है, बेकाम हो जाता है।, ऐसे में यह समझना हमारी भूल होगी कि मानव जीवन में मूल्य सुनिश्चित हैं। वस्तुत मूल्य–संक्रमण की संभावना हर क्षण बनी रहती है।

हालांकि मूल्य–संक्रमण से समाज में मूल्यों में बदलाव आने की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। परिणामत जीवन–मूल्य भी बदल जाते हैं। लेकिन यह भी ध्यातव्य है कि ऐसा कोई परिवर्तन आमूल नहीं होता और पिछले युग के सांस्कृतिक उपादान पूणतया विलुप्त या परिवर्तन नहीं हो जाते, एक प्रकार की प्रवहमानता के कारण पिछले युग से सम्पूर्ण–विच्छेदन कमी नहीं होता। इतना अवश्य अनुभव होने लगता है कि कुछ मान–मूल्य घिस कर पुराने पड़ गए हैं और उनका स्थान किन्ही अपरिचित नवीन प्रेरणाओं ने लिया है। इन्ही नवीन प्रेरणाओं से नवीन विचारों का विकास होता है, कई नई आस्थाएं विश्वास जन्म लेते है कि 'माना कि पुरानी आस्थाएँ टूट रही हैं, लेकिन नई आस्थाओं के निमार्ण की अनिवार्यता का महत्त्व भी अपनी जगह पर है। आस्था ही तो वह जड़ है जिससे मनुश्य अपने जीवन के वृक्ष में हर पतझड़ के बाद नई बहार लाता है। पुरानी आस्थाएँ गिर रही हैं नई आस्थाएँ जन्म ले रही है। इन बदलती आस्थाओं – विश्वासों के साथ मूल्यों में भी उसी गति से परिवर्तन आना शुरू हो जाता हे। स्थापित मूल्यों के स्थान पर इन नवीन प्ररेणाओं नई आस्थाओं के परिपार्श्व में मूल्य – संक्रमण का बोध होता है।

लेखक राजेन्द्र यादव ने स्वयं लिखा है कि पति–पत्नी के वर्ष–भर न बोलने की यह घटना काल्पनिक नहीं, वरन यथार्थ जीवन में उनकी देखी हुई है। फिर भी वे इसका प्रतीकार्थ भी बताते है कि ऐसे अनेक परिवार मिलेगे जहाँ पति–पत्नी परस्पर औपचारिक वार्तालाप करने पर भी मन का संवाद स्थापित नही कर पाते। 'सारा आकाश' जिस दौर की रचना है, उस दौर में संयुक्त परिवारों मे विघटन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी थी और यह समाज के निम्न स्तर तक पहुँच चुकी थी। दिवाकर की पत्नी भी यदा कदा अपनी सास के रूढ़िजन्य व्यवहार से व्यथित नजर आती है और शिरिश तो खुलकर परिवार का संयुक्त व्यवस्था को व्यक्ति के लिए बेहद खतरनाक मानकर उसे पूर्णतः तिरस्कृत कर देता है। इसका कारण है खुद कमाओ खुद खाओ की प्रबल भावना तथा पत्नी को संयुक्त परिवार के दमन चक्र से मुक्ति दिलाना लेकिन पत्नी उनके परिवार ऐसे भी हैं जो एकल रूप में होते हुए भी निरन्तर कलह ग्रस्त रहते है, पति–पत्नी के बीच सम्बन्ध की आत्मीयता का अभाव है। इसके कारण अधिकतर परिवार मूल्य संक्रमण के शिकार हो जाते है।

कहां जा सकता है कि पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी के जातिगत विचारों में अन्तर आया है। पुरानी पीढ़ी के लोग आज भी जाति व्यवस्था को बनाए रखने पर जोर देते है तो नयी पीड़ी के शिक्षित जागरूक युवा जाति के परम्परागत धरातल पर चोट कर रहे हैं। वे उन रूढ़िवादी विचारों तथा जातिगत भिन्नता को समाज से दूर कर देना चाहते हैं। उनके सामने प्राचीन जाति–व्यवस्था व अन्धविश्वास अग्राह्य है। नयी पीढ़ी के शिक्षिक युवा प्राचीन गौरव के बहाने सजा कर रखी सांस्कृति को 'गोबर तथा भूतों की संस्कृति, जैसे सम्बोधन देते हैं। जाति जहाँ सामाजिक सुरक्षा की भावना कि पोशक है, वही दो जातियों को आपस में लड़ाने का काम भी करती हैं। जातियों में छोटे–बड़े की भावना विद्यमान है और यही स्थिति सामाजिक उपद्रवों को जन्म देती है। फिर भी आज, जाति भेद विषयक रूढ़ि अपनी निरर्थकता के बोझ से स्वयं नष्ट हो रही है। आधुनिक जागरूक व्यक्तिसमाज में विद्यमान जातिगत संकिर्णता को छोड़ रहा है।

मूल्य संक्रमण साम्प्रदाय का भी हिस्सा है। आज आवश्यकता यह है कि साम्प्रदाय दूसरे साम्प्रदाय को वैचारित आध्यात्मिक आधार पर दोरा ठीन न समझे और अपने इष्ठ चिंतन के आधार पर भाई चारें का प्रसार करें। साम्प्रदाय एक धार्मिक वैचारिक मत के लोगों का संगठन है। हालांकि वर्तमान में इस स्तर को त्याग किया गया है। जिससें एक साम्प्रदाय के लोग कई लघु साम्प्रदायों में बंट चुके हैं। उदाहरणार्थ दलित कहने को हिन्दू मत में है, लेकिन उनका वैचारिक स्तर हिन्दू मत के विरोध का है, क्योंकि इस साम्प्रदाय ने इन्हें बहुत व्यथा दी है। हिन्दू मत के तथा कथित ऊपरी लोगों में अपनी साम्प्रदाय सम्बन्धी व्यवहारिकता के कारण भी इस मत कि लोगों को हमेशा भ्रमित किया है। आज सम्प्रदायों की परम्परागत मानसिकता पर उनके सवाल उठाए जा रहे हैं, जिससे इनके जागरूकता तथा आधुनिक जीवनयापन शैली है। उपन्यासकार ने सम्प्रदायों की इस व्यवस्था पर तार्किक एवं वैचारिक बहस छेड़ी है।

राजेन्द्र यादव के उपन्ययासों में मूल्य संक्रमण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उन के उपन्यासों में जातिगत संकीर्णता, साम्प्रदायिक संकीर्णता तथा विघटन संकीर्णता स्पश्ट दिखाई देती है। 'सारा आकाश' उनन्यास में पारिवारिक विघटन संकीर्णता दिखाई गई है। 'शह और मात' उपन्यास में जातिगत संकीर्णता दिखाई देता है। 'उखड़े हुए लोग' उपन्यास में शरद और जया प्रेम करते है परन्तु उनकी जाति भिन्न हैं। इस के कारण भी मूल्य संक्रमण स्पष्ट दिखाई देता है। 'शह और मात' में अन्धविश्वास की प्रवृत्ति को प्रस्तुत किया गया है। ढ़ोगी व्यक्ति गेरूए कपड़े धारण करके लोगों को मूर्ख बनाते हैं। इससे सम्प्रदाय का विकास होता है। 'अनदेखे अनजान पुल' में भारत – पाक विभाजन की एक छोटी सी घटना प्रस्तुत हुई है। भारत–पाक विभाजन के समय लाखों लोग इस साम्पदायिक हिंसा का शिकार हुए थे। 'उखडे हुए लोग' में देशबन्धु कहता है– दुनिया को किसी दूसरी चीज से इतना नुकसान पहुँचा है, जितना इन मजहबों से –इन जड़ मतहबों से।'' 'उखड़े हुए लोग' उपन्यास में मायादेवी का परिवार उसकी महत्त्वकांक्षा तथा प्रेम चाहत के कारण बिखर चुका है 'कुलटा' में पति–पत्नी के द्वंन्द्वएवं असमान व्यवहार व मानसिकता की कुटिल बुनावट से परिवार टुट रहा हैं। यह सब मूल्य–संक्रमण है।

निश्कर्शतः मूल्य–प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में 'मूल्य–विघटन', 'मूल्य–?संकट', 'मूल्य–परिवर्तन', आदि ,शब्दों का काफी प्रयोग हुआ है। मूल्य के संदर्भ में विघटन की प्रक्रिया पुरातन अथवा पूर्व–प्रतिश्ठित मूल्यों को पूरी तरह से निश्कासन और नए मूल्यों की स्थापना से सम्बन्धित नही है। अगर हम परिवर्तन की बात करें तो इसका अभिप्राय यह होगा कि मूल्यों द्वारा अपनी पूर्व – स्थिति को त्याग कर नई स्थिति को धारण करना है। इस परिवर्तन के उचित अथवा अनुचित, दोनों पक्ष हो सकते है। जीवन–मूल्य कोई स्थिर अथवा अपरिवर्तनशील अवधारणा नहीं है– जीवन की भांति ही वह गतिशील और परिवर्तनशील है। जिस प्रकार मनुश्य की जीवन–शैली में देश–कालपरक परिस्थिति में परिवर्तन है जिस प्रकार जीवन–मूल्यों की सत्ता मानसिक है इसलिए भैातिक परिवर्तन की अपेक्षा जीवन–मूल्यों में परिवर्तन की गति धीमी होती है। इसलिए जीवन –मूल्यों में बड़े परिवर्तन दिखाई नहीं देते हैं। किसी युग–विशेष के दौरान समाज–विशेष में प्रचलित मूल्यों के प्रति जब अनास्था के भाव की स्थिति बन जाती है वो विद्यमान मूल्यों में टूटना शुरू होती है, उसमें विश्वास आता है।

हालांकि आस्थाहित स्थिति में भी नए मूल्य सहज रूप से अपनाएं नहीं जा पाते। एसी स्थिति वास्तव में मूल्य संक्रमण की स्थिति होती है। वैसे, मूल्य–विवेचन के संदर्भ में 'मूल्य–संकट', 'मूल्य–विघटन', 'मूल्य–परिवर्तन', और 'मूल्य–संक्रमण' शब्दों को पयार्य के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता हें।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net